हिंदी साहित्य
काव्य संकलन

शील चिंतन
खुद को तलाशो, खुद को तराशो

(कविता थेरेपी)

शीलव्रत पटेरिया

लेखक : शीलव्रत पटेरिया प्रकाशक : शीलव्रत पटेरिया प्रकाशक पता: बी-05, न्यू यॉर्क सिटी, राउ बायपास रोड, इंदौर म.प्र. 452012
भारत में मुद्रित
प्रथम संस्करण

कॉपीराइट © शीलव्रत पटेरिया सर्वाधिकार सुरक्षित

sheelvratpateriya@blogspot.c
om

sheel.pateriya@gmail.com

समर्पण
यह पुस्तक मेरे माता-पिता और हमारे परम पिता परमेश्वर को समर्पित है। परमेश्वर ने जीवन दिया और माता-पिता ने पृथ्वी ग्रह पर भौतिक जन्म दिया।

लेखक के बारे में

नेशनल बिल्डर अवार्ड, 2024 (रोटरी क्लब, इंदौर) के प्राप्तकर्ता शीलव्रत पटेरिया इंदौर, मध्य प्रदेश में स्थित एक शिक्षक हैं। वह एक गीतकार, प्रेरक वक्ता और उद्यमशीलता की प्रवृत्ति वाले भी हैं। वह मानद रूप से शील एजुकेशन एंटरप्राइज के लिए काम करते हैं। वह प्रवचन देते हैं, वार्ता आयोजित करते हैं और बुद्धिजीवियों के बीच एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। वह विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कंटेंट क्रिएटर हैं। उन्होंने यू- ट्यूब पर "वक्त लम्हे यूं गुजर जाते हैं", "प्रतिशोध", "स्वतंत्र भारत", "तिरंगे लहराएंगे" जैसे गाने लिखे और प्रोड्यूस किए हैं। वह एक ब्लॉगर भी हैं. वह "द शिट सोसाइटी" @blogspot.com शीर्षक से एक ब्लॉग लिखते हैं। वह लोगों की मानसिकता में बदलाव लाना चाहते हैं. उनका मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन-वस्तुओं से अधिक जीवन को महत्व देना चाहिए। वह अपना संदेश फैलाने के लिए स्कूलों, कॉलेजों, कोचिंग संस्थानों में जाते हैं कि जीतने की मानसिकता सफलता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और प्रार्थना इसमें मदद करती है।

सूची

1. हे सद्गुरु
2. प्रार्थना
3. कविता का जन्म
4. भूल जाऊं सब कुछ, तुमको न भूल पाऊं
5. त्राहि त्राहि मचा दे!
6. क़िस दिन
7. बिन तुम्हारे राम कैसे जी पाउँगा मैं
8. जाऊं तो कहाँ जाऊं हे कृष्ण तुमको छोड़कर
9. आ भी जाओ कृष्ण मेरे
10. हिन्दू
11. जब मेरे सामने मेरा देश रोता है
12. बस, इतना सा ख़्वाब है

13. सोचता मैं नहीं ....
14. 15 अगस्त
15. अभिमन्यु मरते हैं
16. ज़िन्दगी
17. ऐ ज़िन्दगी, तू भी कितना अजीब है
18. घनी अँधेरी रात है
19. जख्मी जिस्म
20. ज़िंदा हूं

21. कभी कहीं तो मिलेगा मुझे मेरा घर
22. प्रतिशोध
23. पतन का हेतु
24. मैं अकेला , गुमसुम बैठा
25. प्रेरक
26. देखता हूँ
27. असफलताओं से सीख
28. बह जाने दो
29. जब कर्म करोगे डट कर
30. कह दो आज
31. कितनी पेचीदा हैं
32. जी लेने दो
33. जरूरी है
34. जीवन
35. अब हंसी नहीं आती
36. खामोश
37. वक़्त की शरारत
38. ज़िंदगी नाम है
39. तो जीवन है **!!!**
40. आक्रोश क्यों है **???**
41. सुनो , चुप्पियाँ भी कहती हैं
42. सोता शहर
43. बेटी
44. संतान
45. तुम्हारी उल्फत ने
46. मुहब्बत के नगमे

47. जो थाम रखा है खुद को
48. नहीं आता है मुझको
49. प्यार के वो मीठे
लम्हे
50. सारी रात राख हो जाती
है
51. चुप ही रहने दो
52. मुझे कुछ कहना है
53. जो कहना चाहा
54. क्या ऐसा कह दूं?
55. मेरा दैहिक घमंड उस दिन
चकनाचूर हो गया

56. मुझे बड़ा नहीं बनना
है .
57. हम बहुत आगे निकल
चुके हैं
58. शमशान
59. सजदा
60. अक्स
61. माया
62. क्या नया तूने किया
63. सत्य - विज्ञ
64. वक्त
65. सड़क
66. होली
67. डर
68. सफलता कब तक नज़र
चुराओगी
69. तलाश है मुझे जिसकी
70. और कितना इतराओगे
71. क्या करूँ

72. हर सुबह नया जीवन

हे सद्गुरु

हे सद्गुरु, हे सद्गुरु, सद्गुरु मुझे
बचा लो।
हे सद्गुरु, हे सद्गुरु,

बिगड़ी मेरी बना दो।
हे सद्गुरु, हे सद्गुरु, गिरने से बचा
लो।
हे सद्गुरु, हे सद्गुरु,
ऊपर मुझे उठा
लो।
हे सद्गुरु, हे सद्गुरु,
गर्त से मुझे
निकालो।
हे सद्गुरु, हे सद्गुरु,
काम ऐसा करा
लो।
सौंपता हूँ मैं स्वयं,
खुद को तुम्हारे
चरणों में।
हे सद्गुरु, हे सद्गुरु, जीवन मेरा
संवारो।

प्रार्थना

भक्ति की पावन धरा से है निमंत्रण तुमको,
मेरे ह्रदयाकाश में आ चाँद बनके चमको

जब से चरण-रज आपकी माथे पर लगायी है,
तब से भगवद्भक्ति मैंने जीवनमुक्ति पायी है

जब से भगवन आप ह्रदय में विराजे हैं,
मन, प्राण, देह, देहरी, द्वार सारे साजे हैं

कविता का जन्म

प्रत्येक कविता के पीछे एक कहानी होती है,
हर कहानी के पीछे एक घटना होती है,
हर घटना के साथ एक ख्वाब जुड़ा होता है,
हर घटना के बाद एक गुबार उड़ा करता है,
हर ख्वाब के साथ एक खुमार होता है
उस खुमारी में ही ख्वाहिश छुपी होती है,
और उसी ख्वाहिश से ही कविता जन्म लेती है|

भूल जाऊं सब कुछ, तुमको न भूल पाऊं

भूल जाऊं सब कुछ, तुमको न भूल पाऊं
तेरे इश्क़ के समंदर में इस कदर डूब जाऊं
तेरा ही नाम सुमिरूं, तेरे गुणों को गाऊं
नचाया है दुनिया ने, अब दुनिया को नचाऊं

त्राहि त्राहि मचा दे!

भगवान कृष्ण आकर मुरली मधुर बजा दे,
रणभूमि भी सजी है, सुदर्शन चला दे,
दुष्टों का नाश कर, जरासंध फाड़ दे,
नाद कर शंख का, त्राहि त्राहि मचा दे!

क़िस दिन

क़िस दिन मेरे कर्तव्य सारे पूरे होंगे?
किस दिन परमात्मा के दर्शन नसीब होंगे?
कब मुक्त हो सकूँगा इस दुःख के आगर से?
कब पार जा सकूँगा संसार सागर से?

प्रतिभा नहीं कुछ पास मेरे, सामान्य सा जीवन जीता हूँ,
सुमिरन करके प्रभु आपका,
कर्तव्य मार्ग पर चलता हूँ|

बिन तुम्हारे राम कैसे जी पाउँगा मैं

छोड़ दोगे मुझे तो कहाँ जाऊंगा मैं
बड़ा आसरा है तेरे दर का मुझे, गर दरवाज़ा बंद किया तो मर ही जाऊंगा मैं
बिन तुम्हारे राम कैसे जी पाउँगा मैं

तात हैं मेरे नहीं, किसे बुलाऊंगा मैं
हे जगतपिता, हे परमेश्वर
छोड़ दोगे मुझे तो कहाँ जाऊंगा मैं.
बिन तुम्हारे राम कैसे जी पाउँगा मैं

जाऊं तो कहाँ जाऊं हे कृष्ण तुमको छोड़कर

जाऊं तो कहाँ जाऊं हे कृष्ण तुमको छोड़कर
पाऊं तो किसे पाऊं, तुमसे बेहतर तुमसे सुन्दर

भटक रहे हैं इस जगत में कब से इधर उधर
आरजू है ले चल, मेरी बांह को पकड़ कर

पापी हैं हम बहुत, फेर मत लेना नज़र
छोड़ देना नहीं, अब आ गए हैं तेरी दर
चल देंगे उसी दिशा हम, ले चलो तुम जिधर
आरजू है ले चल, मेरी बांह को पकड़ कर

"आओगे क्या नहीं भगवन मेरी करूण व्यथा सुनकर
आता नहीं रिझाना गीता के श्लोक पढ़कर
पुकारता हूँ ईश्वर, आँखों में अश्रु भरकर
आरजू है ले चल, मेरी बांह को पकड़ कर"

देख लो एक नज़र,विकराल हैं भंवर बहुत कठिन है डगर, मोह - माया मगर

जीवन जाए न बिखर, इस बात का है डर आरजू है ले चल, मेरी बांह को पकड़ कर |

आ भी जाओ कृष्ण मेरे

ढल चुकी है शाम, अब रात ढलती जा रही

क्या करूँ घनश्याम तुमसे मुहब्बत होती जा रही
हो चुके हैं जन्म कितने, अब नहीं सह पा रही
आ भी जाओ कृष्ण मेरे, यह घड़ी भी जा रही

प्रेम की यह ज्वाला देखो, जलती ही है जा रही
आंसुओं की वेग - वर्षा, होती ही है जा रही
विरह की यह वेदना, अब हूँ नहीं सह पा रही
आ भी जाओ कृष्ण मेरे, उम्र बीती जा रही

क्या कहूं घनश्याम तुमसे, तेरी होती जा रही
आ भी जाओ कृष्ण मेरे, देर है किस बात की
कहूं कैसे श्याम तुमसे, राह देखी रात सारी
आ भी जाओ कृष्ण मेरे यह घड़ी भी जा रही
आ भी जाओ कृष्ण मेरे देह क्षीण होती जा रही
आ भी जाओ कृष्ण मेरे सांस थमती जा रही
आ भी जाओ कृष्ण मेरे वाणी मौन होती जा रही
आ भी जाओ कृष्ण मेरे वृत्ति शून्य होती जा रही
आ भी जाओ कृष्ण मेरे उम्र जाती जा रही

प्रेम की यह अग्नि देखो अब नहीं बुझ पा रही
आंसुओं की प्रबल धारा बहती ही है जा रही
क्या करूँ, कैसे छुपाऊं, बात बढ़ती जा रही
इत्र अपने इश्क़ की फैलती ही जा रही

दूर होते जा रहे सब पास आती जा रही
क्या कहूं घनश्याम तुमसे तेरी होती जा रही
नाम था मेरा बहुत बदनाम होती जा रही
प्रीत की इक भारी कीमत मैं चुकाती जा रही

आ भी जाओ कृष्ण मेरे, मैं बिखरती जा रही
आ भी जाओ कृष्ण मेरे, मैं बिलखती जा रही
मैं बिखरती, मैं बिलखती, ख़त्म होती जा रही
मैं तो मरती, मैं तो मिटती, नष्ट होती जा रही

कभी हंसती, कभी रोती, मैं तो उड़ती जा रही
मैं तो सजती, मैं संवरती, मैं निखरती जा रही
आस है मिलन की वो रात अब है आ रही आ भी जाओ कृष्ण मेरे यह घड़ी भी जा रही

देह मरती मैं नहीं यह ज्ञान पाती जा रही
क्या करूँ घनश्याम तुमसे दिल लगाती जा रही

मैं बुलाती जा रही, तू पास आता जा रहा
और कोई है कहाँ, मुझे इसका क्या पता
देखूं जिधर, पाऊं उधर, कुछ नहीं अब शेष है
लग रहा है मानो मेरा, पूर्ण जीवन उद्देश्य है

मैं मैं न रही, तू तू न रहा, एक होती जा रही
खोकर अहम् को अपने, तुझमे समाती जा रही
लोग हँसते और कहते "तू दीवानी हो रही"
कृष्ण तेरे प्यार में मैं तो पागल हो रही

आ भी जाओ कृष्ण मेरे, भूलती सब जा रही
मैं दीवानी, मैं हूँ पागल, गीत जाती जा रही
आ भी जाओ कृष्ण मेरे, मैं बुलाती जा रही
बांह खोले,आँख खोले, पलकें बिछाती जा रही

भीड़ के भी बीच में तन्हा होती जा रही
देर हो चुकी बहुत, अब नहीं रुक पा रही
ढल चुकी है शाम अब रात ढलती जा रही
आ भी जाओ कृष्ण मेरे, यह घड़ी भी जा रही
भूल कैसे जाऊं, क्यों न दिल लगाऊं
मन में बसी है जब अद्भुत छटा तुम्हारी
सच कहूँगी, न जी सकूँगी, बन के बिन तुम्हारी
ढल चुकी है शाम, अब रात ढलती जा रही
क्या करूँ घनश्याम तुमसे लगन लगती जा रही
हो चुके हैं जन्म कितने, अब नहीं सह पा रही
ढल चुकी है शाम अब रात ढलती जा रही
आ भी जाओ कृष्ण मेरे यह घड़ी भी जा रही

दिल कहीं लगता नहीं है, हो गयी दिलदार की।
आँखे हैं हटती नहीं हैं, मूर्ति है श्रृंगार की।

दिल की बांते दिल ही जाने, शब्द होते मौन हैं।
सब कहूँ तुमसे कन्हैया, और मेरा कौन है?

दुनिया के सारे रिश्ते, दुनिया में साथ होंगे।
आँखे बंद होंगी, कृष्ण साथ होंगे।

मोह माया के बंधनों को तोड़ती हूँ जा रही।
क्या करूँ परवाह उनकी हो गयी जब आपकी?

विरह की यह वेदना, अब हूँ नहीं सह पा रही
क्या कहूँ घनश्याम तुमसे तेरी होती जा रही।

दिल की बांते दिल ही जाने, शब्द सारे मौन हैं।
मैं हूँ तेरी, तू है मेरा, और मेरा कौन है।

छोड़ के दुनिया की यारी, बन सकी तेरी दुलारी।
प्रीत है ये प्राणप्यारी, बंदगी तूने संवारी।

ढल चुकी है शाम अब तो रात ढलती जा रही।
आ भी जाओ कृष्ण मेरे, यह घडी भी जा रही।

हिन्दू

कृष्ण- पथ पर अब हिन्दू नहीं चलता,
पाप का सिर धड़ से अलग नहीं करता, मुक्ति,अध्यात्म पर मन नहीं रमता,
ऐसा व्यक्ति हिन्दू हो नहीं सकता.

कर्म-अकर्म-विकर्म की जिसे सुध नहीं,
दैवीय गुणों का जिसे भान नहीं, आसुरी गुणों का जिसे ज्ञान नहीं, स्थितप्रज्ञ होना जिसका लक्ष्य नहीं,
वो हिन्दू नहीं, वो हिन्दू नहीं....

व्रज - रज में जो नहीं लोटता, भजनों को सुन, जो नहीं झूमता, विग्रह देख जिसका अश्रु नहीं बहता
ऐसा व्यक्ति हिन्दू हो नहीं सकता.

राम वन गमन में जिसका दिल नहीं दुखता
सीता के चरणों का कांटा जिसके सीने में नहीं चुभता
श्री राम की सेना का सैनिक जो हिन्दू बनता नहीं
वो नाम का हिन्दू होकर भी हिन्दू हो सकता नहीं

मिल रही थी राजसत्ता मिल गया वनवास है
हो रही जनता दुखी है, राम - मुख पर हास है
भक्त के आँखों से आंसू रुक नहीं है पा रहे
कर्तव्य पथ पर प्रभु चरण बढ़ते ही हैं जा रहे
भक्ति का है मान किंतु कर्म रुक सकता नहीं
पापेश का सर काटने का प्रण किया मैंने यहीं
ले रहा करवट समय है, दुष्ट का संहार होगा
आ रहे हैं राम रण में, पापियों पर वार होगा
राम के जयघोष से गूंजता आकाश है शत्रु में है खलबली हो रहा हाहाकार है
राम की सी वीरता जिसने सीखी है नहीं
नाम का हिन्दू सही, हिन्दू हो सकता नहीं

जब मेरे सामने मेरा देश रोता है

कैसे जुटाऊं साधन विलासिता के, जब मेरे सामने मेरा देश रोता है।

कैसे हँसूं-खिलखिलाऊं मैं,
कैसे प्रणय गीत गाऊँ मैं,
कैसे चुप रह जाऊं मैं,
कैसे देश को भुलाऊं मैं?
जब मेरे सामने मेरा देश रोता है।

कैसे नज़र फेर लूँ,
कैसे राह मोड़ लूँ,
कैसे अनदेखा करूँ,
कैसे कुछ न करूँ?
जब मेरे सामने मेरा देश रोता है।

बस, इतना सा ख़्वाब है

जीवन सफल गुजर जाये,
वक्त बेकार ना जाये,

किसी के काम आ जाये, बस, इतना सा
ख़्वाब है।

सबको खुशियाँ बाँटू,
सबके आँसू पोछूँ, किसी के दुःख ना देखूँ, बस, इतना सा
ख़्वाब है।

सबको बढ़ता देखूँ, सबको चढ़ता देखूँ, सबको हँसता देखूँ, बस, इतना सा
ख़्वाब है।

सबको उन्नत देखूँ, सबको समृद्ध देखूँ, सबको संतुष्ट देखूँ,
बस, इतना सा
ख़्वाब है।

सबको निर्भय देखूँ,
सबको सुखमय देखूँ,
सबको विश्वस्त देखूँ,
बस, इतना सा ख़्वाब
है।

सोचता मैं नहीं ....

सोचता मैं नहीं मैंने क्या पाया,

सोचता हूँ क्या किया, किसके काम आया ॥

सोचता मैं नहीं मैंने कितना
कमाया,
सोचता हूँ क्या दिया, किसके काम
आया ॥

ज़िन्दगी रह गयी है बस कुछ पल की
और,
सोचता हूँ कितना बनाया कितना
लुटाया ॥

अब जब सब कुछ छूटने को है,
सोचता हूँ क्या सीखा, क्या
सिखाया ॥

15 अगस्त

अंग्रेजी हुकूमत का हिंदुस्तान पर जब बढ़ा अत्याचार था

तब देश के सपूतों ने कर दिया यलगार था

गोरों की विदाई का हो चुका आगाज़ था

अगस्त 15, '47 उस संग्राम का अंजाम था

लाला बिस्मिल अशफाक ने दी बड़ी कुर्बानी थी

गाँधी सुभाष नेहरू ने भी उन्हें भगाने की ठानी थी

सावित्री(बाई फुले), सुचेता (कृपलानी), (कप्तान लक्ष्मी)

सहगल को भी स्वातंत्र्य देवी पानी थी

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी

लाल किले पर फहर तिरंगा हमको याद दिला रहा

काम अभी अधूरा है हमको यह बतला रहा

चल चुके हैं हम बहुत पर हमको आगे चलना है

चीन पाक गठजोड़ बड़ा है उस से हमको लड़ना है

सुबह सूरज निकलता शाम अस्त होता है

कितनी बार भारत हमारे जेहन में होता है

प्रत्येक कर्म से हमारे देशहित जुड़ा होता है

हर कार्य के पीछे सिर्फ स्वार्थ दम्भ भरता है

सुखदेव राजगुरु जब फांसी पर चढ़े होंगे

सबल समृद्ध शक्तिशाली श्रेष्ठ भारत के

स्वप्न आँखों में सजे होंगे

शहादत मुल्क के लिए दी होगी यह सोचकर

निकलेगी भारत माँ हमारी सारी बेड़ियाँ तोड़कर

आज भारत के भ्रष्ट लोग जिन्दगियों से खेलते हैं

करोङो मूल्य के सुवर्ण चांदी से अपना उदर भरते हैं

सड़कों पर हो रहे गड्ढे उन्हें न दीखते हैं

सैलाब से शहर सिसकते बाढ़ों में डूबते हैं

आसमान से क्रन्तिकारी जब यह नज़ारे देखता है

ह्रदय उसका सिकुड़ता चीत्कार करता है

क्या इनके लिए हमने अपना जीवन दांव पर लगाया है

देश के प्रति क्या इनका कोई कर्जा न बकाया है?

पुरातन प्राच्य संस्कृति आज आहें भर रही है

पूरा विश्व था जिसकी सीमा आज कोने में दुबक रही है

हमें आज फिर से समुद्रगुप्त चाणक्य चाहिये

हे कृष्ण तुम्हारी बांसुरी तुम्हारा सुदर्शन चाहिए

जब पौंड्रक पांचजन्य गगन में गूंजेंगे

धरा के दुर्योधनों के पसीने छूटेंगे

सशक्त समृद्ध शक्तिशाली श्रेष्ठ भारत का निर्माण तब होगा

धर्म अधर्म की पहचान कर एक और रण होगा

विधर्मियों की लाशें पृथ्वी पर पड़ी होंगी

सुबह से शाम तक चिताएं धधकती होंगी

राष्ट्र निर्माण यज्ञ में आहुतियां तो देनी है

नए भारत की नयी संकल्पनाएं आज अभी लिपिबद्ध करनी हैं

हम न झुके हैं हम न झुकेंगे आगे ही बढ़ते जाएंगे

मान तिरंगे का रखने को हर फन कुचलते जाएंगे

वह दिन अब दूर नहीं है, भारत विश्व विजयी होगा

विश्व गुरु बनकर भारत विश्व का सिरमौर होगा

अभिमन्यु मरते हैं

अभिमन्यु मरते हैं

जिनका दायित्व है, वो छुट्टी पर चले जाते हैं,
जो हैं मौजूद, वो जानकारी बना न पाते हैं।

शुभ की कामना करने वाले कहीं नज़र न आते हैं,
बात करना तो दूर, फोन तक न उठाते हैं।

ऐसे मौकों पर तनहा रह जाता हूँ, खुद को अनाथ व वीरान पाता हूँ।

हम ऐसी मुसीबतों से रोज़ ही जूझते हैं,
पर क्या मजाल कभी कुछ कहते हैं।

हम ऐसा अपमान रोज़ ही सहते हैं, पर क्या आंखों से अश्रु बहते हैं।

"क्लास नहीं जाते हैं " का दंश झेलते हैं,
अपशब्द सुनकर भी मौन रहते हैं।

हम छोटे होकर भी कर्म करते हैं, वो बड़े होकर भी आदर्श न गढ़ते हैं।

व्यक्ति-हित संस्था-हित से बड़ा हो जाता है,
"मुझे क्या " का अहम् भाव आता है।

जीवन के समर में भीम-दुर्योधन लड़ते हैं,
पर धर्म-अधर्म के फेर में अभिमन्यु मरते हैं।

ज़िन्दगी

ज़िन्दगी ने हर पल इतना रुलाया है,

ज़िंदा रहने में नहीं, मरने में मज़ा आया है।

ऐ ज़िन्दगी, तू भी कितना अजीब है

ऐ ज़िन्दगी, तू भी कितनी अजीब है कभी हंसाती, कभी रुलाती है
कभी उठाती, कभी गिराती है
कभी राजा, कभी रंक बनाती है
कभी अर्श पर बिठाती है
कभी फर्श पर सुलाती है

कभी शांत, कभी व्याकुल बनाती है ऐ ज़िन्दगी, कितना हमें भटकाती है हम चाहते हैं, तुम्हे पकड़ना, समझना
पर तू कभी हमारे हाथ न आती है

ऐ ज़िन्दगी, तू भी कितनी अजीब है तू कभी रूकती नहीं
सदा चलती जाती है
तू कभी ठहरती नहीं
सदा बहती जाती है
कभी कितनी दयालु, कभी कितनी क्रूर है
ऐ ज़िन्दगी, तू भी कितनी अजीब है

घनी अँधेरी रात है

घनी अँधेरी रात है,

सर्वत्र सर्वनाश है,
फिर भी सूर्य अपना वादा निभायेगा,
सुबह - सवेरे धरती पर फिर से आयेगा

इसलिये उम्मीद बनाये रखो किरण एक ही सही पर जलाये रखो रात बीतनी बाकी है
सुबह फिर अपनी झांकी है

जख्मी जिस्म

जख्मी जिस्म

जितने ज़ख्म मेरे जिस्म में जड़े हैं,
उतने मोती समंदर के गर्भ में छिपे हैं।
आकार छोटा पर हौंसले बड़े हैं, इसलिए हारकर भी हराने के लिए डटे हैं।
बुजदिल तो देखो सारे पस्त पड़े हैं,
मगर हम अकेले ही जंग में खड़े हैं। हारें हज़ार होकर भी अड़े हैं
हर मोड़ पर प्रारब्ध से लड़े हैं रूह है घायल पर चेहरे से हंसे हैं

,

क्योंकि उम्मीद के पंख अभी भी लगे हैं।

अब क्या बयां करें हम सफर सजना कर्म - किस्मत ने बुना जीवन अपना

ज़िंदा हूं

ज़िंदा हूं, इसलिए जूझ रहा हूं, मगर,
ज़िंदगी को सलीके से जीने की जद्दोजहद में
ज़िंदगी से हर पल छूट रहा हूं।

तुम गर महसूस कर सको अपनी कमी मेरी जिंदगी में,
तो लौट कर आना.
अंधेरे से सराबोर, रेगिस्तान की तपिश सी मेरे जिंदगी
को उजले उपवन सा बनाना.

ज़िंदा हो, तो ज़िंदा लगो,
कुछ दूर ही सही, मगर साथ चलो।

रुको मत, चलो, कही तो पहुंचोगे, काम कर सकते हो,तो करो, कुछ तो होगा,

पढ़ सकते हो,तो पढ़ो, कुछ तो सीखोगे,
रुको मत, चलते चलो,
कुछ न कुछ करते चलो,
जिंदगी जीना ज़िंदा लोगों का काम है
जिंदगी जीना कहां, कब, किसके लिए,
किस दौर में आसान है.....

कभी कहीं तो मिलेगा मुझे मेरा घर

अपनों के प्यार को तरसा हूँ उम्र भर,
अंधेरे अतीत से भागता हूँ इधर उधर,
कुछ तो है, ढूंढता हूँ जिसे, पसीने से तर -बतर,
हार जाता हूँ, पर मानता नहीं ,खोजता हूँ,अपना घर।
कभी कहीं तो मिलेगा मुझे मेरा घर।
कभी कहीं तो मिलेगा मुझे मेरा घर।

प्रतिशोध

रुदन कर रहा भारत शोषित पुकारता है

रो रो कर अपना दुखड़ा वो यूँ सुनाता है

कि कैसे उसके अपनों का संहार होता है

कैसे उसके परिवार का विनाश होता है

कौन उसके स्वप्न को धूल में मिलता है

कैसे दुर्बल का सब लूट लिया जाता है

कैसे बलवानों ने निर्बल को लूटा है

नर - पिशाचों ने खून भी न छोड़ा है

प्राण रह गये हैं शेष और दशा है करूँ

कारन इस अवस्था का ध्यान से सुन

"सहन किया तुमने बहुत और मौन भी रहे हो तुम,

शयन किया तुमने बहुत अतः गौण भी रहे हो तुम,

शत्रु-बल के सामने सहम कर जिये हो तुम,

शत्रु-प्रभाव के सामने निष्प्रभावी हो गये तुम

बदला समय है प्रबल परिवर्तन होना है

जो भीरु बनकर जिये हैं, उन्हें सिंह बनके जीना है

हो चुका अनुरोध-अनुनय शस्त्र अब उठाना है

सोते हनुमान का पराक्रम जगाना है

दास बनकर जी चुके अब शाह बनकर जीना है

दुश्मन की छाती का रक्त तुझे पीना है

हो चुका है शांति वर्णन, युद्ध वर्णन शेष है
हो चुका है हास्य वर्णन, वीभत्स वर्णन शेष है
हो चुका है बुद्ध वर्णन, कृष्ण वर्णन करना है
पुकार अपने शत्रु से मुझे प्रतिशोध लेना है "

जितना लूटा था तूने मुझे, उतना लूट कर दिखाऊंगा

जितना खून बहाया मेरे अपनों का उतना खून तेरे शरीर का बहाऊंगा जितनी वेदना पहुंचाई मेरे ह्रदय को, उतनी ही वेदना का अनुभव कराऊंगा
मारा था तूने मुझे लाठियों और शब्दों से, तेरे शरीर को कुत्तों से नुचवाऊंगा
भाग सके तो भाग जितना भाग सकता है , तेरा पीछा करता पाताल तक भी आऊंगा
बदले की आग से पागल हो गया हूँ मैं, खून तेरा पीकर प्यास अपनी मैं बुझाऊंगा

सारी शक्ति से आज सिंह गर्जना ये करता हूँ
जूती बनकर नहीं ताज बनके जीता हूँ
याद कर पुराने घाव इतना ही कहना है
हार कर रह चुका, अब प्रहार करके रहना है

गा चुका प्रणय गीत, उन्माद गीत गाता हूँ
दे चुका दया-दान, आज मिटटी में मिलाता हूँ
हो चुका है जन्म मेरा काल तेरा आ रहा
छोड़कर क्षमा को मैं दण्ड देने आ रहा
सर झुका कर जी चुका हूँ, सर उठा कर जीना है

शत्रु भी देखे कि पीठ नहीं सीना है
दे चुका सम्मान हूँ, अपमान ही अब देय है
धूल के काबिल है तू, फूल के न योग्य है
तेरा रक्तपान कर अब तृप्त होना चाहता हूँ
दहकती चाह को अब पूर्ण करना चाहता हूँ
मौन रोष ही अब प्रकट हो रहा है जो कल तक शांत था वही उबल रहा है सारे बने संयम टूटते जा रहे हैं क्रोध के प्रवाह में बहते जा रहे हैं
तूने सब कुछ लूटा, मेरा स्वाभिमान भी न छोड़ा है
वही स्वाभिमान पाने हाथ बढ़ते जा रहे हैं
जल रही दावाग्नि है प्रतिशोध के समुद्र में
जिसमे सारे बंधन भस्म होते जा रहे हैं
लगता ही नहीं है कि हूँ वही निर्बल
विवेकानंद के शब्द प्राण फूंकते जा रहे हैं
अदृश्य चेतना भी क्या असर दिखा रही है
जिनसे डरते हैं सब उनसे लड़ा रही है
एक सत्य ही अब शेष बच रहा है बाकी सारे स्वप्न क्षीण होते जा रहे हैं

जीवन की अपूर्णता तब तक बनी रहेगी
जब तक शत्रु हत्या मेरे हाथों से न होगी
संसार का सारा वैभव वह ख़ुशी न दे सकेगा
जो ख़ुशी मुझे तड़पते शत्रु से मिलेगी
जिस दिन आयेगा जकड़ में अंग अंग काटूंगा
तेरे शरीर से रोम रोम मैं निकालूंगा
जी कर रहा है घोंप दूँ तलवार तेरे सीने में
हंसू-खिलखिलाऊँ तेरे चीखने में, रोने में
देखकर मौत तेरी जहाँ भी काँप जायेगा
स्वयं संसार का नियंता भी चकित रह जायेगा
जन्म ले रही घृणा है, जल्लाद बन रहा हूँ
जो तुझको जला सके वो आग बन रहा हूँ
आज ललकारता हूँ कि आ जाये मेरे सामने
शक्ति संपन्न कर दिया है मुझे मेरे रामने
शत्रु वध किये बगैर मुझको नहीं जीना है
दुश्मन की छाती का रक्त मुझे पीना है

पुजारी नहीं स्वयं भगवान बनके

जीना है
यमदूत नहीं स्वयं यमराज बनके जीना है
मंद पवन नहीं तूफ़ान बन के चलना है

सुन, तेरी छाती का रक्त मुझे पीना है

हाँ, खून मुझे पीना है
हाँ, खून मुझे पीना है

पतन का हेतु

न जीवन में राम हैं, न जानू क्या मर्यादा है,
न जीवन में कृष्ण हैं, न जानू क्या राधा है.

न जीवन में शंकर हैं, हलाहल पीने की न आशा है,
पूजकर कितने देवी देवता भी, कोलाहल का बोलबाला है.

धार्मिक होकर भी जीवन में धर्म नहीं,
क्या यही पतन का हेतु, जीवन की घोर निराशा है?

मैं अकेला, गुमसुम बैठा

मैं अकेला, गुमसुम बैठा, सोचता हूँ

जब कभी.
कब चला, कहाँ पहुंचा, मंजिल मिली
नहीं अभी।
बोल रही हैं दिशायें, मंजिल पास
नहीं दूर है.
साथ है हिम्मत मेरे, हौंसला
भरपूर है.

प्रेरक

ज़िंदगी के सफर में हज़ार बार गिरोगे

हारोगे तब जब उठना छोड़ दोगे

देखता हूँ

देखता हूँ सूर्य को जब भी उदय होते हुये
और देखूं जब पवन को मुक्त हो बहते हुये
देखता हूँ जब क्षितिज में आसमां मिलते हुये
कौन है जिसने रचा है इतना कुछ होते हुये

देखता हूँ जब मृदा से पुष्प को खिलते हुये
देखता हूँ अस्थि की इस देह को

हँसते हुये
देखता हूँ द्रव्य को जब शिशु रूप में ढलते हुये
कौन है जिसने रचा है इतना कुछ होते हुये

देखता हूँ जब निशा में चन्द्रमा की चांदनी
और देखूं वर्षा ऋतु में नभ में दमकती दामिनी
देखता हूँ सौरमंडल के ग्रहों को उड़ते हुये
कौन है जिसने रचा है इतना कुछ होते हुये

देखता हूँ मृत्यु के इस नृत्य को होते हुये
और देखूं जन्म के नव मार्ग को खुलते हुये
देखता हूँ नित नये परिवर्तनों को होते हुये
कौन है जिसने रचा है इतना कुछ होते हुये

है नमन उसको कि जिसने रचा है इतना कुछ होते हुये

है प्रणाम उसको कि जिसने रचा है इतना कुछ होते हुये

असफलताओं से सीख

असफलताओं का यह कैसा सिलसिला शुरू हुआ,
न मंजिले नज़र आयीं, न हौसला बुलंद हुआ.

जिंदगी भी रक्तिम लहूलुहान हो गई,
इरादों ऊँचे हसरतों की हार हो गयी.

वक्त - थपेड़ों ने गिरा, मायूस कर दिया,
कश्ती फसीं भंवर में, किनारा भी खो गया.

प्यार करने वाले भी हमसे रूठ गए, आंसू थे सहारा, वो भी सूख गए.

स्वप्न का घरोंदा टूट कर बिखर गया,
अरमान आरज़ू का जनाज़ा निकल गया.

जीते थे जो घरों में महफिलें सज गयीं,
हारे थे हम हमको तन्हाईयाँ घिर गयीं.

अपने ही आशियाने में अलग हो गए, जो थे हमारे अपने वो ही जुदा हो

गए.

दर्द है, कष्ट है, छटपटाहट है, वेदना है,
जब तक है सांस, तब तक जीना है.

अपनी ही विफलताओं से हमें सीखना है,
गलतियां न दोहरा, आगे बढ़ना है.

दोष दूसरों का नहीं, खुद का ढूंढना है,
जहाँ जैसी जरूरत वहां वैसा बदलना है.

सुख-दुःख मिलकर जीवन को सजाते हैं,
जय -पराजय के पुष्प बगिया महकाते हैं.

जीवन एक युद्ध है, इसे लड़ना ही होगा,
हार हो या जीत, इसे सहना ही होगा.

असफलताओं की श्रृंखला को तोडना ही होगा,
अपने संकल्प-बल से तुम्हे जीतना ही होगा.

बह जाने दो

बहती नदी सा मुझे बह जाने दो, उड़ती हवा सा मुझे उड़ जाने दो, मत रोको मुझे मेरी ही परछाइयों से,
मुझे हर कैद से निकल जाने दो..

जब कर्म करोगे डट कर

कब तक किनारे बैठे यूँ ही मुस्कराओगे।
कब तक दूसरों की उपलब्धियों पर तालियां बजाओगे।।

कब तक पथिकों को मंजिल का
रास्ता बताओगे।
जब चलोगे खुद रास्ते पर तब कहीं
पहुँच पाओगे।।

जब कर्म करोगे डट कर तब स्वप्न
साकार कर पाओगे।।
कब तक किनारे बैठे यूँ ही मुस्कराओगे।

जब तपोगे आग की भट्टी में कहीं,
तभी तुम
हीरे सा निखरोगे।।
जब जलोगे बिना शिकन के माथे पर,
तभी तुम
सोने सा चमकोगे।।

बीत गयी आधी उम्र यूँ ही किनारे

पर,
जब कूदोगे समंदर में तभी पार लगोगे।।

कह दो आज

आयु बढ़ रही है,

उम्र घट रही है,

ज़िंदगी गुज़र रही है,

उम्मीद मर रही है|

इसलिये देर न कर,

किसी और के आने, कहने का

इंतज़ार न कर,

जो कहना है, कह दो आज,

जो करना है, कर दो आज |

कितनी पेचीदा हैं

कितनी पेचीदा हैं ज़िन्दगी की राहें,
हम कर भी न पायें, जो करना चाहें, मुद्दतों से तलाश है जिनकी, कहां हैं वो कंधे और बाहें!!!

जी लेने दो

मुझे खुलकर हंस लेने दो,
जैसा मन करे, वैसा जी लेने दो. तोड़कर अपनी जंजीरों को,
खुले आसमान में उड़ान भर लेने दो.

मुझे बच्चों की तरह खिलखिलाने दो,
हंस कर सारे गम भुलाने दो, मिटटी में लोटने और
तालाब में छलांग लगाने दो.

शिला पर चढ़ आकाश को छू लेने दो, मुझे अपनी सारी सीमायें तोड़ लेने दो,

मन में जो आये वो कर लेने दो, गल्तियां कर जल्दी सीख लेने दो,

आसमान से चाँद, तारे छीन लेने दो, पत्थरों से पानी निचोड़ लेने दो, मुझे सिंह की तरह दहाड़ने दो,
न रोको मुझे, चिल्लाने दो.

मुझे पुण्य-पाप के फेर में न पड़ने दो,
धर्म-अधर्म की नई परिभाषायें गढ़ने दो,
स्थापित गलत परम्परायें पलट देने दो,
मर-मर कर नहीं, जिंदादिली से जिंदगी जी लेने दो।

अपनी मान्यताएं मुझ पर न थोपो, शिष्टाचार के नाम पर अब न रोको, मुझे विद्रोह कर लेने दो,
अपनी राह चुन लेने दो।

मुझे वर्जनाओं से निकल जाने दो, मुझे अपनी नई परिधि बनाने दो, परिंदे को न कैद करो पिंजरे में, मुझे क्षितिज तक उड़ जाने दो।

बन जाने दो मुझे आवारा, क्योंकि जिंदगी न मिलेगी दोबारा.

जरूरी है

कुछ कदम चलना जरूरी है,
कुछ अच्छा लिखना जरूरी है,
कुछ बेहतर सोचना जरूरी है,
सोच को अमल में लाना भी जरूरी है.

तुम नहीं सोचोगे तो कोई ओर सोचेगा,
ज़िंदगी जो बन सकती थी तुम्हारी, उसे कोई ओर सींचेगा.
इसलिए, खुद अपने लिए सोचो,
जो सोचो, उसे अमल में भी लाओ. जिंदगी तुम्हारी है,
इसे खुद के माकूल बनाओ.

जीवन

जीवन तमाम ख्वाहिशों और ख्वाबों को
मुकम्मल
करने के बेहिसाब संघर्ष की बिलखती कहानी है
और उन संघर्षरत पलों का हर एक अनुभव निहायत ही मुक़द्दस, नायब और रूहानी है
दहर की सारी दौलत और
जन्नत की जजा इस अज़ार की न सानी है
मेरे नाजिम का शुक्रिया जिसने सबक सिखाया कि

वो ही मेरा सच्चा रहबर, बाकी सब फ़ानी है

अब हंसी नहीं आती

अब किसी बात पर हंसी नहीं आती, हर हलचल रुह को है कंपाती, दिल कह तो दे बहुत कुछ तुमसे, पर हर बात कही नहीं जाती...

खामोश

बेताबियां बेजोड़ हैं, बेचैनियां अनमोल हैं, चिंताएं सौ ज़ोर है,
फिर भी,
हम खामोश हैं...

ये सच है कि
जुबां कुछ नहीं कहती,
पर,
क्या मेरी खामोशी कुछ तुमसे नहीं कहती...

वक़्त की शरारत

टूटते ख्वाब,
सिमटती ख्वाहिशें,
लड़खड़ाते इरादे,
सिकुड़ती हसरतें,
बता रही हैं कि वक़्त बदल रहा है जो चमकता था सितारा, अब दरक रहा है

दीवारों पर लिखी जा रही वक़्त की इबारत है
ये किसी और की नहीं वक़्त की शरारत है

ज़िंदगी नाम है
ज़िंदगी नाम है, चलते जाने का, ज़िंदगी नाम है, कुछ कर जाने का, ज़िंदगी नाम है, हार न मानने का, ज़िंदगी नाम है, जीत जाने का ज़िंदगी नाम है, खुद को पहचानने का ज़िंदगी नाम है, पहचान बनाने का

तो जीवन है!!!
उल्लास है, उमंग है, उत्साह है, तो जीवन है।
ऊर्जा है, आशा है, विश्वास है, तो जीवन है।
नित नई चुनौतियों से पार जाने का मन है,
तो जीवन है।
नित नई ऊंचाइयों को स्पर्श करने का मन है,
तो जीवन है।

हर दिन उपलब्धि हासिल करने की
लालसा है ,
तो जीवन है।
अपने अस्तित्व को उपयोगी बनाने
की आकांक्षा है ,
तो जीवन है।

असीमित , अपरिमित विस्तार का नाम
जीवन है।
निरंकुश निःस्वार्थ कर्मयोग ही
जीवन है।
अनंत संभावनाओं का नाम ही
जीवन है।
अपनी क्षमताओं का दोहन ही
जीवन है।
व्याकुल हो अपने स्वप्न का पीछा
करना ही जीवन है।
बेताब हो अपने लक्ष्य पर टिके
रहना ही जीवन है।

आक्रोश क्यों है ???

जैसा किया , वैसा पाया ,
फिर मन में
आक्रोश क्यों है ?
जैसा बोया , वैसा काटा ,
फिर मन
बेचैन क्यों है ?
जैसा कर्म , वैसी किस्मत ,
फिर मन में
रोष क्यों है ?

जैसा कार्य, वैसा परिणाम, फिर तू देता
दोष क्यों है?
जैसा संकल्प, वैसा प्रकल्प, फिर इतना
मायूस क्यों है?
जैसा प्रयास, वैसा है भाग्य, फिर तू उदास
क्यों है?
हर हार में भी होता है उपहार कोई

,

फिर ह्रदय में
इतनी हताशा क्यों है?
हर निशा के बाद आता है सवेरा, फिर तू इतना
निराश क्यों है?
हर सांस में भी आस होती है छुपी, फिर तू इतना
भयभीत क्यों है?
सारी कायनात है जब मदद को तुम्हारी,
फिर आँखों में
आंसुओं का सैलाब क्यों है?

सुनो, चुप्पियाँ भी कहती हैं

हमेशा लफ्ज़ ही नहीं,
कभी - कभी खामोशियाँ भी कुछ कहती हैं |
हमेशा नज़दीकियां ही नहीं,
कभी - कभी दूरियां भी कुछ कहती हैं |

अलफ़ाज़ जिन ख्यालों को बयां करने से चूकते हैं
चुप्पियाँ उन ख्यालों को चुपचाप, ख़ामोशी से बयां करती हैं |

सोता शहर

शहर अभी सो रहा है,
सुनी सड़कें, दुकानें बंद, बाजारों में पसरा सन्नाटा, पार्किंग स्पेस में खड़ी बसें, बता रही हैं कि शहर सो रहा है। घरों के भीतर कोई हलचल नहीं, लोगों के बीच कोई फुसफुसाहट नहीं,
न सिसकियां, न किलकारियां,
न दर्द, न बेताबियां,
न दिलों में उठता तूफान,
न जिंदगी को बचाने, संवारने की चिंताएं तमाम.

बता रही हैं कि शहर सो रहा है। भोर होगी, सूरज फलक पर आयेगा, लोग जागेंगे, तैयार हो काम के लिए भागेंगे,
फिर जिंदगी की जद्दोजहद शुरू होगी,
किसी को हरा, किसी से आगे निकलने के लिए दौड़ शुरू होगी,

"मैं बड़ा, मैं बड़ा" के लिए दिनभर लड़ेंगे
शाम होगी, घर लौटेंगे, खाना खाकर चादर ओढ़ेंगे, सोएंगे.
ज़िंदगी का क्रम यूं ही चलेगा, कभी कोई दौड़ेगा, कभी सोएगा.

बेटी
किसी बात पर मुझे अपनी बेटी पर गुस्सा आया,
देख उसे चिल्लाया, डराया और धमकाया।
उसे जीवन जीने का मतलब समझाया, और वक्त अनमोल है विषय पर भरी भरकम भाषण सुनाया.

खुद के बड़े होने का, बाप होने का नाजायज फायदा उठाया.
घर से निकल जाने का, नजरों से दूर हो जाने का फरमान सुनाया.

उसे दिन भर नजरअंदाज किया,
देख कर भी अनदेखा किया।
वो आती रही,
दरवाजे और खिड़की से छुपकर, झांककर जाती रही.

उसकी ख़ामोशी आहूत कुछ बयां कर रही थी,
पर मेरी सत्ता तो दम्भ से भरी हुई थी।
शाम के वक्त वो दिखी नहीं, मैंने दिल से कहा "गई तो गई ",

पर दिल तो दिल है, माना नहीं. मैंने घर के हर कमरे पर दस्तक दी

,

हर कोने में आवाज़ लगाई।
कोई जवाब नहीं मिला, मेरे ह्रदय की रफ़्तार तेज़ हो गई।

वो नहीं थी पर पूछ रही थी। "क्या मेरा जन्म एक अभिशाप है?, क्या खेलना, मस्ती करना, इतना बड़ा गुनाह है?"
मैं सिहर उठा, और दरवाजे की तरफ भागा।
उस निमिष ख्याल आया।
"यदि बाहर ना हुई, तो.... .... " न हुई तो मर जाऊंगा, इन उसके ना जी पाउँगा।

बेचैन मैं बाहर की तरफ भागा. दरवाज़ा खोला।
वो खेल रही थी........ अपनी सहेलियों के साथ।
मगन थी, खुश थी, उल्लास से भरी हुई थी।
वो मेरी ड़ांट भूल चुकी थी, क्योंकि वो निर्दोष थी.
दोषी मैं था, वो नहीं। शायद इसीलिए
वो ख़ुशी से खेल रही थी, मैं नहीं. उसे खेलते देख दिल को सुकून आया, आँखों में चमक आयी।
मैं उसे काफी देर खेलते देखता रहा.
मुझे खुद पर शर्म आ रही थी और उस

पर गर्व हो रहा था.
मुझे खुद पर लाज आ रही थी और उस पर नाज़ हो रहा था।
बेटी क्या होती है, यह समझ आया, बेटी क्यों अजीज होती है, यह समझ आया.
वह मेरे घर जन्मी, यह उसका मुझ पर एहसान है.
अब मुझे खुद पर नहीं, उस पर अभिमान है.

संतान: तुम ही मेरे चंदा,तुम ही मेरे सूरज

तुम ही मेरे चंदा,तुम ही मेरे सूरज
तुम ही मेरे अपने, दिल के दुलारे हो
तुम ही मेरी आशा, तुम ही मेरे विश्वास
तुम ही मेरे आनंद, मुझे प्राणों से प्यारे हो
तुम ही मेरे आदर्श, तुम ही मेरे दर्पण
तुम हीमेरे आश्रय, तुम ही मेरी छांव हो
तुम ही मेरे ईश्वर, तुम ही मेरी

दुनिया
तुम ही मेरे सारे सवालों के जवाब हो

तुम ही मेरे तन - मन, तुम ही अनमोल रतन
तुम ही मेरे जीवन, तुम सभी से न्यारे हो
तुम ही मेरे सर्वस्व, तुम ही मेरे आराध्य
तुम ही मेरी ख़ुशी, मेरी आँखों के तारे हो
तुम ही मेरे सब कुछ, तुम ही मेरा जीवन
तुम ही मेरी ज़िन्दगी के सच्चे सहारे हो
तुम ही मेरे लक्ष्य, तुम हीमेरे हमराज
तुम ही मेरी ताकत, तुम ही मेरे साथी हो

तुम ही मेरे अंश, तुम ही मेरी रुह तुम ही मेरे सुख-स्रोत, बुढ़ापे की लाठी हो
तुम हो तो मैं हूँ, तुमसे जुड़ा मेरा जीवन
तुम ही मेरे उपवन के इक फूल निराले हो
तुम नहीं तो कुछ नहीं, शून्य है मेरा जीवन
तुम ही मेरे जीवन में बहार लाने वाले हो

तुम ही मेरी आत्मा, तुम ही मेरे प्राण हो
तुम ही इस जगत में मेरी प्रीति के प्रमाण हो

तुम ही मेरे दीपक, तुम ही मेरी रोशनी
तुम ही मेरे घर के उजले से उजाले हो
तुम ही मेरे चिंतन, तुम ही मेरी धड़कन
तुम ही इस जहाँ के श्रेष्ठतम नज़ारे हो
तुम ही मेरे असीम अस्तित्व का विस्तार हो
तुम ही मेरे सभी दृढ संकल्प का आधार हो
तुम कटु अनुभवों से दूर इक सुन्दर सा सपना हो
तुम महान सृष्टिकर्ता की इक महान रचना हो

तुम हो अद्भुत, तुम हो अनुपम, तुम बेनज़ीर हो
तुम वसुंधरा में बहती सुवासित समीर हो
तुम ही मेरी अनुभूति, तुम ही अनुरक्ति हो
तुम उस विराट की इक मूल्यवान कृति हो
तुम हमारे प्यार की इक प्यारी सी निशानी हो

तुम हमारे समर की कर्णप्रिय कहानी हो
तुम उस विधाता के इस धरती पर वरदान हो
तुम उस निराकार की इस सृष्टि में पहचान हो

तुम्हारी उल्फत ने

तुम्हारी उल्फत ने असर कुछ यूं किया है,
कि हम तुम्हारी ओर खिंचे आ रहे है।
हम कभी न थे तुम्हारे, पर अब पुरजोरी से तुम्हारे ही हुए जा रहे हैं,
रहते थे पहले खाली खाली से हम, ख्यालों में तुम्हारे मशरूफ़ हुए जा रहे हैं,
रहते थे पूरे होश में तुमसे मिलने से

पहले, अब मदहोश हुए जा रहे हैं।।

मुहब्बत के नगमे

वो मिले तो पहेली सी ज़िन्दगी सुलझे
कोई तो हो जो बिन कहे सब समझे दीदार हुआ न उसका, नज़रें ढूढ़ें हैं कब से
इंतज़ार है जिसका वो कब मिलेगी मुझसे
********************************** ********

मुहब्बत के सफर में मंज़िल नहीं मिलती
ख़त्म होती ज़िन्दगी, मुकम्मल नहीं होती
यादें वो मीठी अश्कों से धूल नहीं पातीं
दिल का दर्द जुबां कभी कह नहीं पाती
******************************** ******

सफर मुहब्बत का शुरू हो न सका, साथी तो मिला, वफा दे न सका.

क्या कहूं तुमसे मैं साजन
मेरी नज़रों ने सब कह दिया तोड़कर गुरुर अपना
तेरे क़दमों में सर रख दिया हवाओं ने दिल का आलम
हर कहीं लिख दिया

खबर तुझे ही नहीं कुछ भी
दर्द सारा पी लिया

देखती हो तुम जब मेरी तरफ,
मेरे दिल को सुकून ओ चैन आता है ज़िन्दगी मिलती है मेरे दिल को जिस्म का ज़र्रा - ज़र्रा मुस्कुराता है
********************************** ********************

मुझसे रूठकर, मुंह मोड़कर
तुम जो चली गयीं
घर की रंगीन दीवारें भी बेरंग हो गयीं
घर का नूर, घर की रौनक, साथ ले गयीं
हंसी - ठिठोली, किलकारियां, सब मौन हो गयीं
मुझसे रूठकर, मुंह मोड़कर
तुम जो चली गयीं

तुम मिलो तो बुनूं हसीं सपने
दो जिस्म, एक जान बनकर बताऊँ क्या छिपा है मेरे मन में पथरीली डगर, अकेला हूँ सफर में साथ मिले तुम्हारा तो कुछ बात बने

********************************** **********************

चलो हम भी मुहब्बत के सफर में चलते हैं,
साथी हो वफादार, यही दुआ करते हैं
.

वफा लेकर भी वफा दे न सका,
वो कितना सितमगर था, जो मेरा हो न सका.

ताउम्र मुझे प्यार कर
मेरा ऐतबार कर
प्यार का इज़हार कर
यूँ न बेकरार कर

********************************** *********

आज भी आंखों में उनकी तस्वीर लिए बैठे हैं,
आयेंगे कभी वो, ये उम्मीद लिए बैठे हैं.

यारो दुआ करो मुहब्बत में मुकाम मिले,
ज़िन्दगी जाया न जाये, मुझे भी इनाम मिले.

जश्न ओ जन्नत की मुझे कोई तलब नहीं,
ख्वाहिश एक ही है कि तुम मेरे मुहाफिज बनो.

जो थाम रखा है खुद को

जो थाम रखा है खुद को, अब टूट जाने दो
शाख से पत्ता नीचे, अब गिर जाने दो

जो छुपा रखा है सीने में जाने कब से
वो रिश्ता वाबस्तगी का अब कह जाने दो
- - - - - - - --- --- --- --- - - - - - - --- --- --- --- - - - - - - - -- -
- - - - - - - --- --- --- --- - - - - - - --

नहीं आता है मुझको

नहीं आता है मुझको मुहब्बत की नुमाइश करना,
नहीं सीखा है मैने जाहिर - ए - जज़्बात करना,
सीखा है तो बस इतना,
तुम्हे अपना कहना, तुम्हे अपना समझना!!!

प्यार के वो मीठे लम्हे

आँखों में मेरी आंसू अब कभी न आयेंगे
दर्द से भरे किस्से अब हम न सुनायेंगे
टूटा है जो दिल आज बिना आवाज़ किये सीने में रखके पत्थर खामोश हो जायेंगे

प्यार के वो मीठे लम्हे अब लौटकर न आएंगे
ज़िन्दगी के गीत हम अकेले गुनगुनायेंगे

निशा के अंधेरों से पार कैसे जायेंगे
बिन तुम्हारे दिन हमारे कैसे बीत पायेंगे

बीते हुये लम्हे मेरी आँखों में देखोगे तुम
जुबां से एक शब्द भी कह न पायेंगे
कशिश पलती है जो मेरी रूह में उसी के सहारे ज़िंदगी बितायेंगे

सारी रात राख हो जाती है

बिना मिले ही मुलाकात हो जाती है, आँखों आँखों में ही सही, पर बात हो जाती है,
गर मिला न इशारा दिन भर,
सारी रात राख हो जाती है |

चुप ही रहने दो

चुप ही रहने दो, तुम मुझे बर्दाश्त कर न पाओगे,
झूठ कहता रहा तो बेपनाह इश्क फ़रमाओगे,
जो सच कह दिया गलती से कभी, मेरा सरेआम कत्ल कर निकल जाओगे|

मुझे कुछ कहना है

मुझे कुछ कहना है
संग तेरे रहना है ।
बिन तेरे नहीं जीना है
तेरा होके रहना है|

मेरे खून का कतरा-कतरा तुम्हारा है
मेरे जिस्म का ज़र्रा - ज़र्रा तुम्हारा है
मेरी हर साँस, हर धड़कन तुम्हारी है
सुबह से शाम बस तुम्हारी खुमारी है|

मन में हो रहा हर स्पंदन तुम्हारा है
चेतना में उठ रहा हर स्फुरण तुम्हारा है
तुमको पाकर मैंने खुद को खोया है

सारा कलुष मैंने मन से धोया है

जो कहना चाहा

जो कहना चाहा, कभी कह न पाया, दिल के जज़्बात जुबां तक ला न पाया,
मुहब्बत करता रहा तुमसे, चुपचाप उम्र भर

जब ज़सारत जुटाई, तब चलने का वक्त आया

क्या ऐसा कह दूं?

क्या ऐसा कह दूं,

कि दिल को तेरे छू लूं,

किस नज़र से देखूं,

कि मन को तेरे पढ़ लूं,

कुछ रखा नहीं मैंने,

जिसे कह दूं है मेरा,

सब कुछ दिया तुझको,

अब और क्या दे दूं,

दिल दिया, अस्तित्व दिया,

जिस्म का जर्रा जर्रा तेरे नाम किया,

कुछ पास नहीं मेरे,

जिसे कह सकूं है मेरा,

दिन तुम्हारे, शामें तुम्हारी,

रातें तुम्हारी, सांसें तुम्हारी,

मेरी जवानी तुम्हारी,

हर रवानी तुम्हारी,

सब कुछ दिया तुमको,

अब और क्या दे दूं,

आज ऐसा क्या कह दूं,

कि दिल तो तेरे छू लूं।

दार्शनिक

मेरा दैहिक घमंड उस दिन चकनाचूर हो गया

मेरा दैहिक घमंड उस दिन चकनाचूर हो गया,
जब बिस्तर पर पड़ा मैं उठने को मजबूर हो गया.

मेरी आँखों के सामने पिता की मौत का मंजर था,
मेरा भी क्या वही होगा, प्रश्न प्रबल था.

प्रयाग के संगम तट के दस्तावेजों में मेरा भी नाम दर्ज होगा,
राख हो चुकी देह का गंगा में विलय होगा.

देखकर देह का भविष्य मैं दंग रह गया,
मेरा दैहिक घमंड उस दिन चकनाचूर हो गया.

मुझे बड़ा नहीं बनना है.

यदि बड़े होने का मतलब अकड़ दिखाना है,
यदि बड़े होने का मतलब इतराना है, यदि बड़े होने का मतलब षड़यंत्र रचना है,
तो मुझे बड़ा नहीं बनना है.

यदि बड़े होने का मतलब भ्रष्ट होना है,
यदि बड़े होने का मतलब कम हंसना है,
यदि बड़े होने का मतलब तनावग्रस्त रहना है,
तो मुझे बड़ा नहीं बनना है.

यदि बड़े होने का मतलब तौलतौल कर बोलना है,
यदि बड़े होने का मतलब पॉलिटिकली करेक्ट होना है,
यदि बड़े होने का मतलब जिम्मेदारी ढोलना है,
तो मुझे बड़ा नहीं होना है.

हम बहुत आगे निकल चुके हैं

पीड़ा वेदना किसी की दिखती नहीं है,
संवेदनाओं के स्वर अब मरने लगे हैं.

किसी की मौत पर आंसू आते नहीं, गैरों की तकलीफों पर हंसने लगे हैं.

एक-दूसरे पर भरोसा अब रहा नहीं, सीक्रेट कैमरे इसीलिये लगने लगे हैं.

वाकई, हम बहुत आगे निकल चुके हैं.

शमशान

जो हूँ, दिखता नहीं,
जो दिखता, वो हूँ नहीं।
देह जो दृढ़ दिखती है, टिकती नहीं।
मौत की आहट सुनाई पड़ती नहीं।

शरीर जिसका हर पल ह्रास होता जा रहा।
बिना रुके कब्रिस्तान बढ़ता जा रहा।
तुम ही कहो, कैसे करूँ,उस शरीर का अभिमान है?
शरीर जिसका अंत सिर्फ और सिर्फ शमशान है।

सजदा

वो उनसे मिलने कहीं नहीं आता जाता है
जहाँ सर झुकता है, वहीँ सजदा हो जाता है

अक्स

तुमसे कहाँ अलग हूँ
तुम्हारा ही तो अक्स हूँ
तुम हो तो मैं हूँ

गर तुम नहीं तो मैं कहीं नहीं हूँ |

माया
गो गोचर जहँ लगि मन जाई, सो सब माया जानहु भाई

सत्य क्या, मिथ्या क्या
यह बतलाता हूँ
मिथ्या का पर्दा गिरा
सत्य का दर्शन कराता हूँ |

जो कुछ भी दिखता इन्द्रियों से वो सभी कुछ मिथ्या है प्रकाशता है जो इन्द्रियों को केवल वही सच्चा है |

अस्तित्व केवल चेतना है अज्ञानता ही वेदना है|

क्या नया तूने किया

क्या नया तूने किया
चिर प्रमाद में रमता जिया

उद्देश्य कुछ बनाया नहीं काम किसी के कुछ आया नहीं वंचितों को उठाया नहीं भटकों को मार्ग दिखाया नहीं

भोगमय जीवन जिया
क्या नया तूने किया स्वार्थ से भरपूर जीवन

रग रग में कामिनी कंचन
विषयों में फंसा रहा
क्या नया तूने किया

व्यर्थ में जीवन जीता
सांसे गिनता
तू न जन्मा है इसलिये
चल उठ खड़ा हो, स्व - शक्ति पहचान लक्ष्य बना, वेग से बढ़ गतिमान!!!

सत्य - विज्ञ

मैं न हताश, निराश हूं,

बस, वक्त के ही साथ हूं,

समय हंसाता है, तो हंसता हूं,

संकेत करता है, तो रोता हूं

सुख - दुख, मान - अपमान

जैसे द्वंदों से अनभिज्ञ हूं,

मैं स्वरूपस्थ, आत्मनिष्ठ,

स्थितप्रज्ञ, सत्य - विज्ञ हूं

वक्त

वक्त कब किसके लिए रुकता है, सदा बहता, सदा चलता है,

जो पकड़ता है वक्त को आगे से, वो सदा सफलता की सीढियां चढ़ता है,

हाथ से वक्त फिसला, समय गुज़रा, क्या कभी किसी के लिए लौटता है,

सफर ज़िंदगी का कभी रुकता है नहीं,
चले थे हम सब अकेले, सफर में अकेले हैं नहीं,

पर आखिरी मंजिल तक कौन साथ होगा, कुछ नए साथ होंगे, पुरानों का साथ छूटेगा,

पर हम रुक सकते हैं नहीं,
नियति की चाल को थाम सकते हैं नहीं,

चलो फिर वक्त के साथ चलते जाएं, हर वक्त सफलता की सीढियां चढ़ते जाएं

वक्त रुकेगा है नहीं, यह समझते जाएं,
अपने स्वप्नों की दुनिया प्यारी गढ़ते जाएं,

स्वार्थ दंभ मिटाएं, अहम छोड़ किसी अनजान के काम आएं

वक्त रुकेगा नहीं, हममें से किसी को छोड़ेगा नहीं,
काल के कपाल पर अपनी छाप छोड़ जाएं।

सड़क
सड़क नहीं है ये, ये है अमर प्रेम का आंगन,
मिलते हैं यहीं सजनी और सजनी का साजन.

होली
आओ मनायें मिलकर होली का त्योहार।
रंग घुलें जीवन में ऐसे, हो जाये होली सदाबहार।।

रंगों का त्यौहार जीवन में रंग
बिखेरे।
हो जाए उजियारा, मिट जायें
अँधेरे।।
बुराई की होलिका जले, प्रह्लाद
की भक्ति खिले।
प्रेम की गंगा बहे, दिल से दिल
मिले।।

ईश्वर से है कामना, ऐसा हमको वर
दे।
बन जायें कर्मयोगी, जीवन सजे- संवरे।।
ज्ञान का प्रकाश करे असीम

विस्तार।
आओ मनायें मिलकर 2025 में होली का त्योहार।।

पूरे होंगे सपने, थे जो पड़े
अधूरे।
जायें काली रातें, रह जाएँ सिर्फ
सवेरे।।
संस्कार, संस्कृति, सामञ्जस्य
का बना रहे आधार।
आओ मनायें मिलकर होली का
त्योहार।।

डर
इंसानो की बस्ती में डर लगने लगा है,
वीराना जंगल प्यारा लगने लगा है. पशुओं की पशुता का तो पता है, इंसान अब हर पल रंग बदलने लगा है.

सफलता कब तक नज़र चुराओगी? सफलता कब तक नज़र चुराओगी?
सफलता, कब तक न नज़र आओगी?
बढ़ रहे हैं पग, हर पल, तुम्हारी तरफ एक दिन, मेरे आगोश में आओगी

तलाश है मुझे जिसकी
तलाश है मुझे जिसकी वो मंजिल है कहाँ,
बेचैन हूँ जिसके लिए, घूमा हूँ सारा जहाँ।

और कितना इतराओगे

इतना इतरा रहे हो, और कितना इतराओगे
वक़्त की नदी में एक दिन बहा दिये जाओगे
साजो-सामान तुम्हारा कुछ काम न आयेंगा
तख्तो-ताज जैसा धरा, सब धरा रह जायेगा
वक़्त है अभी, वक़्त रहते संभल जाओ वक़्त गुजरने से पहले कहीं तुम न गुज़र जाओ

क्या करूँ

इस कोलाहल में साझीदार बनूँ जहाँ सभी चिल्ला रहे हैं
वहां मैं भी आवाज़ करूँ?

जिस ओर सब भाग रहे
उसी ओर मैं भी भाग चलूँ सुवर्ण-धन की चाह पालूँ कमनीय काया की कामना करूँ?

या

दौड़ छोड़कर अब ठहर जाऊं
पंख समेटकर अपने अक्स में सिमट जाऊं
शिव बनकर, विष पीकर,
बस, मौन हो जाऊं?

सृष्टि छोड़कर, साक्षी हो जाऊं दृश्य छोड़कर, दृष्टा हो जाऊं

इस देह से प्राण खींचकर
विराट चेतना में विलीन हो जाऊं?

हर सुबह नया जीवन
मेरा हर सुबह नया जीवन, हर शाम नयी कहानी है।
बिसरा दो बीता हुआ, वह कथा सारी पुरानी है।